Dr. Madan Paswan, History | Lecture No. 13 (1)
Class: B.A. Part-II (Hons.) P-IIIrd. | Date: 10.10.2020
Topic: Iqta System. | Continue Lecture...

(4) व्यापार और वाणिज्य :

13वीं - 14वीं शताब्दी में अनेक नगर अस्तित्व में आये। अपने शिल्प उत्पादन के लिए भोजन की आवश्यकता थी। अलाउद्दीन खिलजी के समय तक नकद धन में वसूली की प्रथा स्थापित हो चुकी थी। भूमि कर का नकद भुगतान करने के लिए किसानों को अपनी अतिरिक्त उपज तुरंत बेचनी होती थी। लेकिन व्यापारियों को नगरों के रूप में ऐसे बाजार प्राप्त थे जहाँ वे अनाज और खाद्यान्न बेच सकते थे। इन सभी कारकों ने व्यापार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(5) आंतरिक व्यापार :

इसका विकास दो स्तरों पर हुआ —

(क) ग्राम और
(ख) शहर के बीच

थोक वस्तुओं, मुख्य रूप से कृषि उत्पादन, का कम दूरी का व्यापार तथा विभिन्न शहरों के बीच विलासिता की वस्तुओं का व्यापार के रूप में।

पहले स्तर के व्यापार में मुख्यतः चावल, चना और गन्ना आदि खाद्यान्न वस्तुएँ तथा शिल्प उत्पादन के लिए कच्चे माल-कपास जैसी वस्तुओं का होता था।

(6) विदेशी व्यापार :

खिलजी काल में दिल्ली सल्तनत में गुजरात के मिलने से सल्तनत और फारस की खाड़ी तथा लाल सागर के बीच व्यापारिक संबंध बढ़े। एक यूरोपीय यात्री टॉम पायर्स जो 16वीं सदी में भारत आया था, खम्भात से मलक्का को निर्यात होने वाली वस्तुओं की सूची प्रदान करता है।

इटली यात्री वार्थेमा (16वीं सदी) खंभात बंदरगाह के विषय में जानकारी देता है। समुद्री व्यापार का अन्य केन्द्र सिंध था। यहाँ का महत्वपूर्ण बन्दरगाह देबुल था।

Conti....

तथैल व्यापार सिंध से लेकर बंगाल के बीच में गुजरात मालाबार तथा कोरोमण्डल तट तक होता था। भूमि मार्गों से व्यापार का प्रमुख केन्द्र मुल्तान था।

Continue ...